International Journal of Applied Research 2021; 7(3): 130-132

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(3): 130-132
www.allresearchjournal.com
Received: 01-01-2021
Accepted: 03-02-2021

राहुल कुमार
शोधार्थी वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
राहुल कुमार
शोधार्थी वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार, भारत

नासिरा शर्मा और स्त्री विमर्श

राहुल कुमार

सारांश
स्त्री विमर्श पर अनेकों स्त्री लेखिकाओं ने उपन्यास, कहानी के माध्यम से अपना विचार और समीक्षात्मक दृष्टिकोण को व्यक्त किया है। नासिरा शर्मा उन्हीं में एक प्रसिद्ध उपन्यास लेखिका है। जिन्होने अपने उपन्यास शाल्मली, ठीकरे की मंगनी, शब्द पखेरू, बहिश्ते जहरा और 'पारिजात' के माध्यम से नारी की वेदना, संत्रास और पुरूषवादी मानसिकता से मुक्ति की बात कही है। नासिरा जी ने प्रत्येक उपन्यास में नारी की आत्मविश्वासी और संघर्षशील छवि का वर्णन किया है। 'शाल्मली' उपन्यास की नायिका शाल्मली जागरूक और अपने अधिकार को प्राप्त करने की प्रबल इच्छा वाली नारी हैं।

कूटशब्द: नासिरा शर्मा, स्त्री विमर्श, उपन्यास

प्रस्तावना
नासिरा शर्मा ने 'स्त्री-विमर्श' पर अपने उपन्यासों में स्त्री पात्रों के माध्यम से बहुत कुछ कहा है। स्त्रियों की पीड़ा, कुंठा और तिरस्कार को स्त्री पात्र के माध्यम से उजागर किया गया है। हमारे देश में स्त्री अबला है, कह देने से बात स्पष्ट नहीं हो जाती है लेखक अपने स्पष्टवादी दृष्टि से जांच-परखकर स्त्री की दशा और मानसिकता का वर्णन नहीं करते, तो नारी की सही व्याख्या नहीं हो पाती है। यह नारी की नारीत्व सुलभ गुण से स्पष्ट हो पाता है। नारी घर संभालने वाली है, या नारी पुरूषों के कन्धे से कन्धे मिलाकर चलने वाली है। नारी सरकारी कार्यालाय में काम करने वाली है नारी सड़को पर काम करने वाली है, या ईट भट्टो पर काम करने वाली है। ऐसा कोई कार्य नहीं है, जो नारी ना करती हो। नारी की अनेकरूपता की सूची बहूत बड़ी है।

स्त्री के कई रूपों को लेकर जिसमें उसके पीड़ा, संत्रास और कुंठा को खत्म कर उसके जीवन में स्वतंत्रता, उत्साह और उमंग को भरने की कोशिश भी

'नासिरा जी' करती है। नासिरा जी का अधिकांश भाग शहरों में बीता है, पर वह गाँव की मिट्टी को बखुबी पहचानती है। ग्रामीण स्त्री के स्वाभाव और गुण को अच्छी तरह पहचानती है। स्त्रियों के अन्दर की कुंठा और अकेलापन को भी बड़े ही मनोवैज्ञानिक तरीके से उजागर करती है। सही बात यह है कि अपनी सारी रचनाओं में वे इंसान की तकलीफों को विशेष रूप से स्त्रियों की तकलीफों को व्यक्त करती है।

स्त्री शक्ति का रूप है। सृष्टि के विकास क्रम में उसका महत्वपूर्ण स्थान है। वह सौन्दर्य, समर्पण, ममता, करूणा, क्षमा, वात्सल्य, त्याग और दया की प्रतिमूर्ति है। उन्हीं गुणों के कारण उसे देवी कहा जाता है। स्त्री चिन्तन आज विश्व चिन्तन की बहस है, इसलिए कि उसमें करोड़ो स्त्रियों का दमन, अन्याय एवं अत्याचार से मुक्ति की सोच निहित है।

'शाल्मली उपन्यास नासिरा शर्मा की प्रसिद्ध उपन्यास है। शादी के बाद शाल्मली के जीवन में एक ही ध्वनि गुँजती है कि नरेश पति है और वह पत्नि स्वामी और दासी का संबंध शाल्मली और नरेश के बीच एक मजबूत दीवार का रूप धारण करने लगी थी। नरेश हमेशा यह कहता था कि ''तुम ठहरी एक आधुनिक विचार की महिला ..... विचारों में स्वतंत्र, व्यवहार में उन्मुक्त, तुम्हारे संस्कार हमसे अलग है। नरेश का यह वाक्य सुनते-सुनते शाल्मली को आधुनिक शब्द से घृणा होने लगी थी। शाल्मली समय से पहले जीवन संघर्ष में कूद पड़ी थी।

शाल्मली उपन्यास में नारी का एक अलग और नया ही रूप उभरा है, शालमली इसमें परंपरागत नायिका नहीं है, बल्कि वह अपनी मौजूदगी से यह अहसास जगाती है कि परिस्थियों के साथ व्यक्ति का सरोकार चाहे जितना गहरा हो पर उसे तोड़ दिए जाने के प्रति मौन स्वीकार नहीं होना चाहिए। शाल्मली सेमल के दरख्त की तरह है, जिसका अंश-अंश संसर्ग में आने वाले को जीवन-दान करता है, लेकिन उसका पति नरेश इस सच को स्वीकार करने की जगह अपनी कुंठाओं में जीता है। अपने स्वार्थो को शाल्मली के यथार्थ आचरण से उपर समझता है, वह हिसाबी-किताबी जीव है, लेकिन जिन्दगी की सच्चाई के साथ उसका समीकरण गलत है। 'शाल्मली' एक अफसर है, बावजूद उसके वह बेहद सामान्य है। पति, माता-पिता और सास के साथ उसके रिश्ते नजदीक के हैं। यही उसकी विशेषता है कि वह सरकारी आफिसर होते हुए भी उस वर्ग से अलग है और एक साधारण भारतीय नारी के यथार्थ को जीती नारी का प्रतीक भी नहीं है, जिसे पुरूष-सत्ता की गुलामी में सबकुछ खो देना पड़ता है। लेकिन 'शाल्मली' दया और करूणा में डूबी अश्रु बहाने वाली उस नारी का प्रतीक भी नहीं है, जिसे पुरूष-सत्ता की गुलामी में सबकुछ खो देना पड़ता है। वह सामान्य महिला होते हुए भी आत्मनिर्भर और विश्वासी स्वाभाव वाली है। हर चुनौती का सामना करने को तैयार रहती है।

ठीकरे की मंगनी में 'नासिरा शर्मा' ने आजादी के बाद की संघर्षशील लड़की जो अपनी मेहनत और योग्यता से साबित करती है कि पितृसत्ता में स्त्री की एक अपनी पहचान भी होती है। उपन्यास मे प्रमुख चरित्र महरूख की जिन्दगी में ठहराव था और बहुत सारे लोगों के साथ-साथ चलने की ताकत थी। इसी सोच से उसने बाहर और भीतर के सच को पहचाना था। ठीकरे की मंगनी हुई थी महरूख के जन्म के साथ ही। तेज रफ्तार जिन्दगी जीने वाले एक पुरूष की सत्ता को स्वीकारने के लिए विवश कर दिया गया था उसे। उसकी जिन्दगी का सबसे बड़ा हादसा था वह, पर महरूख इस हालत में ढ़ली हुई थी, जिसे कोई तोड़ नहीं सकता। ठोस इरादे और नजरिए ने उसे थोपी हुई सत्ता के खिलाफ खड़ा कर दिया। 'नासिरा शर्मा' का यह उपन्यास ऐसा उपन्यास है, जिसमें

महरूख की दास्तान के माध्यम से दो खिडकियाँ खुलती है जिसमें एक गाँव है, वहाँ का स्कूल है, गाँव के असहाय लोग है, जिनके दु:खों से वह परेशान हो उठती है। दूसरी तरफ परम्परागत टकराव है। इन दोनों ही परिवेशों से गुजरते हुए 'महरूख' बदहवास दुनिया की सच्चे अर्थो में पड़ताल करती है और चुनती है अपने लिए उस सत्य को, जो उसे अकेला तो कर देता है, पर आत्मविश्वास के साथ खड़ा होना सिखा देता है।

'बहिश्ते जहरा' उपन्यास नासिरा शर्मा का पहला उपन्यास है जो सन 1984 को प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में ईरानी क्रांती को आधार बनाया गया है, इस उपन्यास का दूसरा नाम 'सात नदियाँ एक समन्दर' है। इस उपन्यास की प्रमुख पात्र सात सहेलियाँ है। सूसन, मलिहा, परी महनाज, तय्यबा, सनोवर, अख्तर इन्ही स्त्री पात्रों के आस-पास कथावस्तु घुमती रहती है। नारी का यह देश प्रेम और जान देने का साहस एक पुरूषात्मक समाज को संदेश है कि नारी किसी से कमजोर नहीं है।

'पारिजात' उपन्यास में नासिरा शर्मा का यथार्थ से युक्त मानव स्वाभाव और मानसिक परेशानियों से घिरे दो व्यक्ति रोहन और रूही की कहानी है। रूही उपन्यास की सबसे प्रभावशाली चरित्र है। उपन्यास की कथावस्तु में इतिहास कही किरदार बनकर उभरता है तो कही वर्तमान और अतीत के बीच सुत्रधार की भूमिका निभाता नजर आता है। पारिजात केवल एक वृक्ष कथा और विश्वास मात्र नहीं है, बल्कि यथार्थ की धरती पर लिखि गई एक ऐसी तम्न्ना है, जो रोहन के खून में रेशा-रेशा बनकर उतरी है और रूही के श्वासों में ख्याब बनकर धुल गई है उपन्यास में 'पारिजात' एक रूपक नहीं दरअसल नए पुराने रिश्तों की दास्तान है।

कहा जा सकता है कि नासिरा शर्मा का सभी उपन्यासों में सृजनान्मकता का निचोड़ है, जिसमें उनके विचार, भाषा, संवेदना और नारी विमर्श का उच्च समीक्षा दृष्टि का पता चलता है।

संदर्भ ग्रन्थ

नासिरा शर्मा - 'शाल्मली'
नासिरा शर्मा - 'ठीकरे की मंगनी'
नासिरा शर्मा - 'पारिजात'